भजन

तर्ज–नफरत की दुनिया को छोड़कर

निजधाम खिलवत में,श्याम श्यामा के संग रुहें
रहती सदा खुशहाल
सुख नूर नजरों से सदा देने वाले अपने
खांवद नूर जमाल

1–माशूक चरणों को रूह नैनो मे राखूं
कित जाने ना देऊं पलको को यूं ढांपू
श्री राज चरणों ने खैंच के दिल ये
रूहों के बदल दिये सब हाल

2–है नूर का सागर महबूब मुख मंडल
अंबार शोभा का अंग इश्क के भीगल
हम रूहें अंग उनके कि दर्शन को आये
जिनके नित नित नूर जलाल

3–हक दिल में कोई रूह एक बार जो डूबी
वापिस नही निकली निसबत की ये खूबी
हक भी तो रुह दिल को अर्श करके
यूं बैठे हैं बातें करें बेमिसाल